ऋषि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

# श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(देवस्थान विभाग पंजी. क्र. : 6/2011/जालोर, स्थापना वर्ष - वि.सं. २०६० सन् 2003)

**वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान, वेद विज्ञान मन्दिर**

भागल भीम, भीनमाल - 343029, जिला - जालोर (राजस्थान)

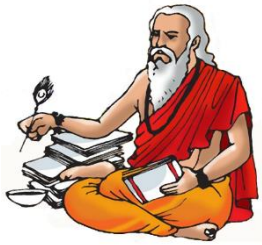

महर्षि ऐतरेय महीदास

**पत्रांक :** **तिथि :** ज्येष्ठ कृष्ण ७/२०७७ **दिनांक :** 14/05/2020


**प्रमुख एवं आचार्य**

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

**न्यास के पाँच अभियान**

**1. वेद रक्षा अभियान**

वैदिक तथा आधुनिक विज्ञान पर गम्भीर शोध से वर्तमान विज्ञान को नयी दिशा देना। विश्व में वेदों की वैज्ञानिकता प्रतिपादित कर एवं वेद को समस्त मानव जाति का धर्म ग्रन्थ सिद्ध कर समस्त विश्व में वेद को प्रतिष्ठित करना।

**2. गौ-कृषि-पर्यावरण रक्षा अभियान**

गौ-विज्ञान के प्रति जन चेतना जगाना। कृषि में जैव खाद, जैव ऊर्जा के प्रति जन जागरण, जल संरक्षण, प्राकृतिक, यौगिक व आयुर्वेदिक चिकित्सा से आरोग्य क्रान्ति, यज्ञ (हवन) द्वारा पर्यावरण रक्षा क्रान्ति।

**3. राष्ट्र रक्षा अभियान**

राष्ट्रियता की भावनाओं का प्रचार-प्रसार, कर्तव्यपरायणता एवं राष्ट्रिय अखण्डता एवं एकता के प्रति भारतीयों में क्रान्ति भाव जगाना।

**4. समाज सुधार अभियान**

सामाजिक दुरितों यथा जातिवाद, साम्प्रदा-यिकता, छुआछूत, अशिक्षा, नशाखोरी, अन्धविश्वास आदि का निराकरण तथा मानवीयता का सच्चा भाव जगाना।

**5. आर्य युवा चरित्र निर्माण अभियान**

युवा पीढ़ी को देशभक्त, सच्चरित्र, बलवान्, कर्तव्यनिष्ठ एवं धर्मात्मा बनाना।

9829148400@upi

**नोट- न्यास को दिया गया दान**

/vaidicphysics

## (माननीय प्रधानमन्त्री महोदय की सेवा में सार्वजनिक निवेदन)

सेवायाम्

**माननीय श्रीमान् नरेन्द्र मोदी महाभाग**
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली।

**विषय - भारत को आत्मनिर्भर बनाने के आपके महान् स्वप्न को साकार करने हेतु कुछ सुझाव।**

महोदय!

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विनम्र निवेदन है कि अप्रैल **2020** माह में **'मन की बात'** कार्यक्रम में आपकी कुछ बातें तथा दिनांक **12-05-2020** को राष्ट्र के नाम सन्देश में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के आपके स्वप्न वा संकल्प से बहुत प्रसन्नता हुई। 'मन की बात' कार्यक्रम में आपके शब्दों का सार इस प्रकार था -

**"हर बात को Evidence Base पर परखने की हठ करना हमारी लम्बी दासता का परिणाम है।"**

मान्यवर!

इसी सन्दर्भ में मैं आपकी सेवा में विशेष निवेदन करना चाहता हूँ -

1. भारत की पुरानी दासता के दंश को अनुभव करना तथा वर्तमान भारत को आत्मनिर्भर बनाने का स्वप्न देखना आपके व्यक्तित्व के सर्वथा अनुकूल है और सम्पूर्ण देश के लिए गौरवपूर्ण भी।
2. वर्तमान समस्त राजनैतिक, प्रशासनिक व वैज्ञानिक तन्त्र इसके लिए अनुकूल नहीं है। इसका भुक्तभोगी मैं स्वयं हूँ। मैंने भारत को विश्व में सैद्धान्तिक भौतिकी के क्षेत्र में विश्व को सुपर पॉवर बनाने हेतु **'वैदिक रश्मि थ्योरी ऑफ यूनीवर्स'** का आविष्कार किया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग मन्त्री माननीय डॉ. हर्षवर्धन जी से माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी, पूर्व **MoS, HRD** एवं वर्तमान सांसद - बागपत ने दिसम्बर **2019** में संसद भवन में बैठकर मेरी प्रत्यक्ष वार्ता भी कराई। इस पर माननीय मन्त्री महोदय ने

*'हे मनुष्य! तू सौ हाथों से कमा व हजार हाथों से दान कर।' (अथर्ववेद)*

अपने निजी सचिव को श्रीमान् सचिव महोदय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के साथ मेरी मीटिंग कराने का तुरन्त आदेश भी दिया परन्तु उनके आदेश की पालना उनके निजी सचिव ने भी नहीं की। मेरे साथ एक वर्तमान युवा वैज्ञानिक डॉ. सन्दीप कुमार सिंह भी थे, उनके निजी सचिव ने जो कहा, उसे मैं सार्वजनिक करना उपयुक्त नहीं समझता।

3. इसरो ने आपको लिखे मेरे किसी पत्र के उत्तर में इतना तो बताया कि वह भी नासा की भाँति सैद्धान्तिक भौतिकी पर अनुसंधान कर रहा है परन्तु उसकी यह जानने में कोई रुचि नहीं देखी कि मैं उन्हें इस कार्य में क्या सहयोग दे सकता हूँ?

4. कुछ अपुष्ट (अभी तक) सूत्रों के अनुसार नासा आदि संस्थानों में वैदिक विज्ञान पर अनुसंधान हो रहा है। वे मेरे ग्रन्थ **'वेदविज्ञान-आलोकः'** का भी अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने इससे कुछ विशेष प्राप्त भी किया है परन्तु अपना देश इसे महत्व नहीं दे रहा। ऐसा लगता है कि वे देश मेरी थ्योरी से कुछ आविष्कार करके उसे पेटेण्ट भी करा लेंगे और भारत सोता ही रहेगा अथवा इसके अधिकारी वा वैज्ञानिक किन्हीं पूर्वाग्रहों में जकड़े भारत को आगे नहीं बढ़ने देंगे। ऐसा पूर्व में भी हुआ है, जब हमारे ग्रन्थों से चीन आगे बढ़ा और हमारे वैज्ञानिकों ने उपेक्षा की, जिसकी चर्चा अमेरिकी प्रोफेसर **David Hoteher Childress** की 1975 में लिखी हुई पुस्तक **"The Anti Gravity Handbook"** में की है। इसकी चर्चा माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने संसद में भी की थी। मुझे लग रहा है यह दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास फिर दोहराया जायेगा, क्योंकि मैं पिछले **5-6** वर्ष से आपकी सरकार के दरवाजे खटखटाते-२ थक गया, परन्तु परिणाम शून्य रहा।

5. ऐसा प्रतीत होता है कि आपके विभाग आपकी भावनाओं के अनुसार कार्य नहीं करते, वे कहीं और से भी नियन्त्रित होते हैं। उनके लिए भारत के आत्मस्वाभिमान का महत्व नहीं है, बल्कि वे अपने-२ संगठनों के स्वार्थ तक ही सीमित हैं।

6. महोदय! कोई भी देश आत्मनिर्भर तभी हो सकता है, जब उस देश के नागरिक व शासक वर्ग सर्वप्रथम बौद्धिक रूप से स्वतन्त्रता का पाठ सीख लें। अपने प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा पद्धति, संस्कृति, सभ्यता, भाषा आदि पर गर्व करना सीख जायें। इसी दिशा में विशेष अनुसंधान होवे। मैं वैदिक भौतिकी के क्षेत्र में देश को वह दे सकता हूँ, जो भारत में अन्य किसी के पास नहीं है। क्या भारत इस पर विचार करेगा?

7. सूक्ष्म, लघु व बड़े उद्योगों में धन का उपयोग करना आपकी दूरदर्शिता है, इससे श्रमिकों का जीवन बदलेगा। आपकी नीति से किसान व मजदूरों का भविष्य बदलेगा, यह आशा है परन्तु कृषि क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करना शेष है। जब तक गो आधारित कृषि व अर्थ व्यवस्था का महत्व देश नहीं समझेगा, इस दिशा में अनुसंधान नहीं होगा, तब तक आत्मनिर्भरता भी विषैला अन्न उगाने वाली तथा स्वास्थ्य व पर्यावरण का विनाश करने वाली ही होगी।

8. आज कोरोना का विश्व में आतंक है वा सोची समझी नीति के अन्तर्गत आतंक पैदा किया गया है। इस महामारी के पीछे चीन की भूमिका धीरे-२ सर्वविदित हो गयी है और चीन के प्रति आपका बदला दृष्टिकोण भी हमें दिखाई दे रहा है परन्तु क्या हम उस सामान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेंगे, जो चीन से खरीदा जाता रहा है? विशेषकर मोबाइल, कम्प्यूटर आदि। ऐसे सामान तथा खाद्य वस्तुएं चीन से खरीदना घातक है।

9. कोरोना क्या भारत के लिए वास्तव में उतना खतरनाक है, जितना भय पैदा किया गया है, क्या हमारी जीवन शैली, खान-पान, जलवायु आदि यूरोप व अमेरिका आदि देशों से सर्वथा भिन्न होने के कारण अधिक सुरक्षाप्रद नहीं है?

10. विश्व में अब तक लगभग चार माह में कोरोना से लगभग **3** लाख मृत्यु हुई हैं। क्या **7-8** अरब की जनसंख्या में इससे अधिक मृत्यु क्या अन्य रोगों से नहीं होती हैं? टी.बी,

कैंसर, डायबिटीज, हृदय रोग, गुर्दा रोग, अनेक प्रकार के फ्लू आदि से मरने वालो के आंकड़े क्या **3** लाख प्रतिवर्ष से भी बहुत अधिक नहीं होंगे? तब इस कोरोना से इतना भयभीत क्यों किया गया है?

**11.** तम्बाकू व शराब आदि नशों के कारण प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कोरोना की अपेक्षा विश्व में कई गुना व्यक्ति दर्दनाक मृत्यु से मरते होंगे परन्तु किसी मीडिया वा सरकारों ने इन नशों से कभी जनता को भयभीत नहीं किया। यदि इनसे कोरोना की भाँति भयभीत किया जाता, इनसे मरने वालों के वीडियो प्रचारित किये जाते, तो सम्पूर्ण राष्ट्र इन नशों से मुक्त हो गया होता। क्या केवल राजस्व की प्राप्ति के लालच में लाखों लोगों को मारा जाना किसी भी सभ्य देश के लिए उचित है? असंयमित जीवन एवं मांसाहार के कारण होने वाले रोगों से कभी किसी को भयभीत नहीं किया गया, यदि ऐसा होता तो विश्व के लोगों की जीवन शैली एवं आहार प्राचीन भारतीय जीवन शैली के समान हो गये होते।

**12.** चिकित्सा व स्वास्थ्य विज्ञान का एक अनिवार्य अंग यह भी है कि रोगी को सान्त्वना दी जाये, उसे कभी भी भयभीत नहीं होने दिया जाये, जिससे उसका मनोबल रोग से लड़ने में सहयोग करे। ऐसा सभी चिकित्सक करते भी हैं। कैंसर व हृदय रोग आदि गम्भीर रोगों के बारे में रोगी को अंधेरे में रखते व उसके अभिभावकों को ही वास्तविकता बताते हैं। यदि रोगी को स्पष्ट बता दिया जाये, तो वह भयवश तुरन्त दम भी तोड़ सकता है। परन्तु आज विश्व में हम क्या देख रहे हैं कि कोरोना से मृत्यु दर बहुत कम होते हुए भी उससे न केवल रोगी को अपितु सम्पूर्ण वातावरण में एक ऐसा भयानक आतंक फैला देते हैं कि रोगी तो मर ही जाये, अपितु उसके परिजन व पड़ौसी व नगर भर तक भयभीत होकर कांपने लगें।

**13.** जिस रोगी को यह सब आतंक का वातावरण मिले, तथा पहले से हृदय, गुर्दा, मधुमेह, एच.आई.वी., कैंसर, टी.बी. आदि कोई रोग हो, तब क्या वह बचेगा?

**14.** इस पर उसे टी.बी., कैंसर, स्वाइन फ्लू, मलेरिया आदि उन रोगों की तीव्र दवाएं दी जायें, जो रोग उसे हैं ही नहीं, तब क्या ये दवाएं उस रोगी पर दुष्प्रभाव नहीं करेंगी? मैं इस बात का साक्षी हूँ, जब लगभग **20** वर्ष पूर्व कफ, खांसी में मुझे एक चिकित्सक ने टी.बी. की दवाएं दीं और मैं निरन्तर गम्भीर संकट में फंसता गया। अन्त में वह दवा बन्द की तथा दमे की दवा ली और स्वस्थ हो गया। मेरे पूज्य पिताजी भी टी.बी. नहीं होने पर भी टी.बी. की दवा देने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। तब क्या यह सम्भव नहीं है कि कोरोना संक्रमित रोगी इन दवाओं के कारण अधिक मर रहे हों? उनमें से जो डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर, एच.आई.वी. आदि से भी ग्रस्त हैं, वे कैसे बचेंगे? तब इस प्रकार के प्रयोग क्यों किये जा रहे हैं? क्यों रोगियों की सहज लाक्षणिक चिकित्सा नहीं की जा रही है?

**15.** महोदय! आप दासता के दंश की स्मृतियों से दुःखी हैं और भारत को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं तो क्यों आपने प्रारम्भ से ही भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद, प्राकृतिक, हौम्योपैथिक व यूनानी आदि को महत्व नहीं दिया? क्यों **WHO** के ही आदेशों पर चले, जो आज स्वयं चीन के साथ संदेह के घेरे में है? जो सज्जन यह कहते हैं कि कोई आयुर्वैदिक पद्धति से कोरोना ठीक करने का दावा नहीं करता, गारण्टी नहीं लेता, मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि संसार में कौन सा ऐलोपैथिक डॉक्टर कोरोना को ठीक करने का दावा करता है? जब छोटी सी शल्यक्रिया करने से पूर्व सर्जन रोगी के अभिभावक से लिखवा लेते हैं कि रोगी मर गया, तो वे उत्तरदायी नहीं हैं, तब वे ऐलोपैथी डॉक्टर क्यों आयुर्वैदिक डॉक्टरों से गारण्टी चाहते हैं? एलोपैथी डॉक्टर के पास दवा नहीं और मान लें वैद्यों का भी दावा नहीं, तब जैसे प्रयोग ऐलोपैथी वाले कर रहें, वैसे उनको क्यों नहीं करने दें? क्यों रोगी अपनी स्वतन्त्रता से अपनी चिकित्सा नहीं करा सकता?

16. जब लॉकडाउन धीरे-२ हटेगा, सामाजिक दूरी रखनी होगी, सभी कार्य करने भी होंगे, तब देश में सभी वाहनों, फर्नीचर्स, भवन आदि की मात्रा भी **3** गुनी करनी होगी, यह सब कैसे होगा? क्यों नहीं शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने पर जोर नहीं दिया जा रहा? क्यों संयमित, सादा व शाकाहार पूर्ण जीवन जीने की बात नहीं कही जा रही, उल्टा यह प्रचार किया जा रहा है कि मांसाहार से यह रोग नहीं फैलता।
17. क्या यह सर्वेक्षण नहीं होना चाहिए कि विश्व में कितने देशों ने लॉकडाउन का पूर्ण पालन किया और किन-२ देशों में मृत्यु दर कितनी-२ रही? पिछड़े देशों में मृत्यु दर क्यों कम है? क्या हम उन देशों से सीखेंगे? क्या हम आत्मनिर्भर होकर स्वयं ही निर्णय लेने का प्रयास करेंगे अथवा विश्व बिरादरी के प्रवाह में ही बहते जायेंगे?
18. मान्यवर! भविष्य में **5G, G.M.** बीज व **A.I.** को भारत में लाने के बारे में पुनर्विचार करें। ये सब दूरगामी विनाश को लाने वाले हैं। अच्छा हो, हमारा देश अब अपनी विकास की अवधारणा में संशोधन कर ले, क्योंकि आज यह अवधारणा अत्यन्त भ्रान्त व मिथ्या है।
19. आज आपका आयुष मन्त्रालय, स्वास्थ्य मन्त्रालय का मात्र एक हैल्पर की भाँति अनुचर बना है, जैसे हमारे वैज्ञानिक विदेशी वैज्ञानिकों के अनुचर बने रहते हैं और हम उसी से प्रसन्न हो जाते हैं। यह कैसी दुर्दशा है? बौद्धिक दासता की कैसी पराकाष्ठा है?

मान्यवर! निवेदन करने को बहुत कुछ है परन्तु अभी इतना ही। मैं यह पत्र सर्वजनिक कर रहा हूँ, जिससे देश के अन्य जागरूक नागरिक भी इस पर विचार करके मेरी बात को आप तक पहुँचा सकें। मैं लगभग **6** वर्ष से अपने पत्रों का कोई परिणाम नहीं पा सका हूँ, इस कारण हो सकता है कि देश के अन्य नागरिक भी आपसे निवेदन करें, तो आपके अधिकारी आप तक मेरी बात पहुँचाएं।

आशा है आप इन सभी बिन्दुओं पर गम्भीरता से विचार करके राष्ट्र के दूरगामी हित में निर्णय लेने का अनुग्रह करेंगे। आपके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं, जो यह कार्य कर सके। इस कारण आपसे करबद्ध निवेदन है कि आप इस पर गम्भीरता से विचार करें।

आशा व विश्वास के साथ

**प्रतिलिपि -**
माननीय डॉ. हर्षवर्धन जी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी व स्वास्थ्य
मन्त्रालय, भारत सरकार

राष्ट्र का एक जागरूक नागरिक

अग्निव्रत

**आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक**
प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)